Course – M.A Education Part 1 (1)
Paper – V (Psychological Foundation of Education)
Topic – personality (Part 1)
prepared by – Dr. Sangeeta Kumari

इकाई : 7 व्यक्तित्व
Unit : 7 PERSONALITY

7.1 व्यक्तित्व की संकल्पना (Concept of Personality)

व्यक्तित्व एक जटिल प्रत्यय है। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को दो भिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित करने का प्रयास किया है। कुछ वैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को बाहरी पक्ष जैसे – शारीरिक रचना, रूपरेखा रंग आदि को ध्यान में रखकर और कुछ ने व्यक्ति के आंतरिक पक्ष जैसे – मानसिक रचना, स्वभाव, बौद्धिक योग्यता आदि को ध्यान में रखकर परिभाषित करने का प्रयास किया है। Personality शब्द की उत्पत्ति persona से हुई है। Persona एक लैटिन शब्द है जिसका अर्थ मुखावरण या नकली चेहरा है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने के अनुसार व्यक्तित्व उद्दीपन के रूप में कार्यरत होता है। प्रत्येक व्यक्तित्व का एक उद्दीपन मान होता है जिससे उसकी प्रभावशीलता निर्धारित होती है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचय इस बात से मिलता है कि वह दूसरे व्यक्तियों को किस रूप में प्रभावित करता है। उसका यह प्रभाव सकारात्मक भी होता है और नकारात्मक भी। कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्तित्व का बोध प्रतिक्रिया के रूप में होता है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचय इस बात से मिलता है कि वह भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार व्यवहार या प्रतिक्रिया करता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति का आन्तरिक स्थाई स्वभाव ही व्यक्तित्व है। कुछ.

Scanned with CamScanner

ने व्यक्तित्व के बाह्य पक्ष तथा आन्तरिक पक्ष दोनों पर बल दिया है। आल्पोर्ट द्वारा दी गई परिभाषा काफी समग्र तथा संतोषजनक है।

Allport, 1937 के अनुसार,
"व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोदैहिक शीलगुणों का गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के प्रति उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते हैं।"

"Personality is the dynamic organization within the individual of those psychophysical systems that determine his unique adjustment to his environment."

उपर्युक्त परिभाषा का विश्लेषण करने से व्यक्तित्व का सही रूप स्पष्ट होता है :-

(1) मनोदैहिक शीलगुण (Psychophysical system)
आल्पोर्ट की परिभाषा के अनुसार व्यक्तित्व का सम्बन्ध शारीरिक तथा मानसिक तंत्रों से है। आल्पोर्ट ने शारीरिक शीलगुण तथा मानसिक शीलगुणों, दोनों पर बल दिया।

(2) संगठन :- (organization)
आल्पोर्ट ने कहा कि व्यक्तित्व वास्तव में शीलगुणों का योगफल नहीं, बल्कि एक विशेष संगठन है। यदि व्यक्तित्व वास्तव में शीलगुणों का योगफल होता तो सभी व्यक्तियों के व्यवहार एवं समायोजन समान होते। अतः भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के शीलगुणों में समानता होते हुए भी उनके विशिष्ट संगठन के कारण प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार या समायोजन भिन्न हो जाता है।

(4) गत्यात्मकता (Dynamism) :-
Allport के अनुसार मनोदैहिक शीलगुणों का यह संगठन स्थिर नहीं है बल्कि गत्यात्मक है।

Scanned with CamScanner

परिवर्तनशील वातावरण में व्यक्तित्व संगठन में भी परिवर्तन हो सकता है। एक व्यक्ति एक परिस्थिति में ईमानदार और दूसरी परिस्थिति में बेईमान प्रमाणित हो सकता है। एक व्यक्ति एक परिस्थिति में निर्दय और दूसरी परिस्थिति में दयालु सिद्ध हो सकता है। अतः व्यक्तित्व संगठन में तात्यात्मकता का गुण पाया जाता है। परन्तु, इसके साथ-साथ व्यक्तित्व संगठन में संगति या स्थिरता भी पाई जाती है। यह सत्य है कि एक व्यक्ति एक परिस्थिति में ईमानदार तथा दूसरी परिस्थिति में बेईमान बन जाता है। परन्तु यह भी असत्य नहीं है कि ईमानदार व्यक्ति अधिकांश परिस्थितियों में ईमानदार ही रहता है और केवल कुछ विशेष परिस्थितियों में बेईमान बन जाता है। इसी तरह, बेईमान व्यक्ति अधिकांश परिस्थितियों में बेईमान ही रहता है और केवल कुछ विशेष परिस्थितियों में ईमानदार बन सकता है।

(4) <u>अपूर्व समायोजन:-(unique adjustment)</u>

Allport के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार या समायोजन अपूर्व होता है। एक ही वातावरण में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के समायोजन में भिन्नता होती है। दो व्यक्तियों के समायोजन में कोई समानता नहीं दीख पड़ती है। इसे व्यक्तित्व की अपूर्वता कहते हैं।

7.2 व्यक्तित्व के सिद्धान्त (Theories of personality

7.2.1 Type theory (प्रकार सिद्धान्त)

यह सिद्धान्त इस विश्वास पर आधारित है कि कुछ व्यक्तियों में लगभग एक ही तरह के शीलगुण पाए जाते हैं। कुछ विशिष्ट शीलगुणों के समूह को ही प्रकार (Type) कहते हैं।

हिप्पोक्रेट्स का वर्गीकरण (Hippocrates Typology)

हिप्पोक्रेट्स ने शरीर द्रव्यों के आधार पर व्यक्तित्व का विभाजन चार प्रकारों में किया। उनके अनुसार शरीर की रचना चार प्रकार के द्रवों से हुई है जिन्हें रक्त (blood), काला पित्त (black bile), पीला पित्त (yellow bile) तथा कफ (Plegm) कहते हैं। यद्यपि प्रत्येक शरीर में ये चारों द्रव पाए जाते हैं, तथापि इनमें से कोई एक ही द्रव प्रधान होता है और व्यक्ति के स्वभाव को निर्धारित करता है।

रक्त द्रव (blood humor) →

जिस व्यक्ति में यह प्रधान होता है वह आशावादी (sanguine) होता है। वह प्रसन्न तथा खुशमिजाज होता है।

काला पित्त (black bile) →

जिस व्यक्ति में काले पित्त की प्रधानता होती है वह निराशावादी (melancholic) होता है। वह व्यक्ति प्रायः उदास तथा खिन्न रहता है।

पीला पित्त (yellow bile) →

जिस व्यक्ति में पीला पित्त प्रधान होता है वह चिड़चिड़ा होता है।

कफ (Phlegm) →

जिस व्यक्ति में कफ की प्रधानता होती है वह विरक्त (Phlegmatic) होता है।

Scanned with CamScanner

7.2.2 क्रेश्मर का वर्गीकरण (Kretschmer's Typology)

क्रेश्मर ने शारीरिक रचना के आधार पर तीन प्रकारों की रचना की है।

(i) कृशकाय (asthenic) :-

लम्बे तथा दुबले-पतले शरीर वाले व्यक्ति को कृशकाय कहा गया। ऐसे व्यक्ति की माँसपेशियाँ अविकसित होती है। शरीर का वजन एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में कम होती है। ऐसे लोग चिड़चिड़ा मिजाज के होते हैं। नींद कम आती है और दिवास्वप्न अधिक करते हैं।

(ii) पुष्टकाय (athletic)

सुडौल तथा संतुलित शरीर वाले व्यक्ति को पुष्टकाय कहते हैं। ऐसे व्यक्ति का शरीर औसत कद का होता है। शरीर न अधिक लम्बा तथा न अधिक नाटा। मांसपेशियां सुविकसित होती हैं।

(iii) स्थूलकाय (Pyknic type)

मोटे तथा नाटे शरीर वाले को स्थूलकाय कहते हैं। ऐसे लोग शान्तिप्रिय तथा खुश मिजाज होते हैं।

7.2.3 शेल्डन का वर्गीकरण (Sheldon's Typology)

शेल्डन के व्यक्तित्व को तीन प्रकारें में विभाजित किया।

(i) गोलाकृतिक (Endomorphy)

मोटे, नाटे तथा गोल शरीर वाले व्यक्ति को गोलाकृतिक कहा गया। इस प्रकार के व्यक्ति के स्वभाव को विसेरोटोनिया (viscerotonia) कहा गया।

(ii) आयताकृतिक (Mesomorphy)

संतुलित शारीरिक रचना वाले व्यक्ति को आयताकृतिक की संज्ञा दी गयी। ऐसे लोगों में हड्डियों तथा मांसपेशियों का विकास संतुलित होता है। इस प्रकार के व्यक्ति के स्वभाव को somatotonia कहते हैं।

Scanned with CamScanner

(iii) लम्बाकृतिक (Ectomorphy)

लम्बे तथा दुबले पतले शरीर वाले व्यक्ति को लम्बाकृतिक कहते हैं। शरीर कोमल तथा छाती पतली होती है। ऐसे व्यक्ति के स्वभाव को Cerebrotonia कहते हैं।

युंग का वर्गीकरण (Jung's Typology)

(i) अन्तर्मुखी (Introvert)

ऐसे व्यक्ति संकोचशील, लज्जालु तथा आत्मकेन्द्रित होते हैं। एकान्त में रहना ज्यादा पसंद करते हैं।

(ii) बहिर्मुखी (Extrovert)

ऐसे व्यक्ति एक दूसरे से मिलने जुलने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति में यथार्थता अधिक देखी जाती है।

7.3 विशेषक सिद्धान्त (Trait Theory)

इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्तित्व की रचना भिन्न-भिन्न शीलगुणों से हुई है। जिस प्रकार अनेक ईंटों के मिलने से भवन का निर्माण होता है उसी प्रकार विभिन्न विशेषकों के संगठन से व्यक्तित्व का निर्माण होता है। ये मौलिक तत्व या शीलगुण अपेक्षाकृत स्थिर होते हैं और विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार द्वारा प्रकट होते हैं।

7.3.1 लेविन का दृष्टिकोण (Lewin's view)

लेविन ने विशेषक सिद्धान्त का समर्थन किया और बताया कि व्यक्तित्व की रचना अनेक शीलगुणों से हुई है। उन्होंने व्यक्तित्व शीलगुणों को मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया

(i) परिधीय कोश (Peripheral cells, P)

(ii) केन्द्रीय कोश (Central cell, C)

उन्होंने व्यक्ति के दो तहों का उल्लेख किया जिन्हें अवगात्मक गति भाग (Perceptual motor region, P.M)

Scanned with CamScanner

तथा अन्तः वैयक्तिक भाग (inner personal region, I-P) की संज्ञा दी गयी। व्यक्ति का अन्तः वैयक्तिक भाग अवगात्मक गति भाग से पूरी तरह घिरा रहता है और उसका कोई भी सीधा सम्बन्ध बाह्य वातावरण से नहीं होता है। इस अन्तः वैयक्तिक भाग के दो विशेषक हैं, जिन्हें परिधीय कोश तथा केन्द्रीय कोश कहते हैं। परिधीय कोश वास्तव में अवगात्मक गति भाग से सटे रहते हैं, जिन्हें सतही शीलगुण या दृश्याकृतिक शीलगुण कहते हैं। केन्द्रीय कोश अन्तः वैयक्तिक भाग के केन्द्र में पाए जाते हैं जिन्हें केन्द्रीय शीलगुण या जीनाकृतिक शीलगुण कहते हैं।

7.3.2 आल्पोर्ट का दृष्टिकोण (Allport's View)

आलपोर्ट ने शीलगुण को मुख्यतः दो भागों में बाँटा है।-

(i) **सामान्य शीलगुण (Common Trait)**

सामान्य शीलगुण से तात्पर्य वैसे शीलगुणों से होता है जो किसी समाज या संस्कृति के अधिकतर लोगों में पाया जाता है।

(ii) **व्यक्तिगत शीलगुण (Personal Trait)**

व्यक्तिगत शीलगुण से तात्पर्य वैसे शीलगुणों से होता है जो किसी समाज या संस्कृति के व्यक्तिविशेष तक ही सीमित होता है अर्थात उस समाज के सभी व्यक्तियों में नहीं पाया जाता है।

आलपोर्ट ने व्यक्तिगत प्रवृत्ति को तीन भागों में बाँटा है:-

(i) **कार्डिनल प्रवृत्ति (Cardinal disposition)**

इस तरह की व्यक्तिगत प्रवृत्ति व्यक्तित्व का इतना प्रमुख एवं प्रबल गुण होता है कि इसे छिपाया नहीं जा सकता है। जैसे:- महात्मा गाँधी का सत्य और अहिंसा

(ii) **केन्द्रीय प्रवृत्ति (Central disposition)**

केन्द्रीय प्रवृत्ति सभी व्यक्तियों में पाई

Scanned with CamScanner

जाती है। प्रत्येक व्यक्ति में 5 से 10 ऐसी प्रवृत्तियाँ या गुण होते हैं जिसके भीतर उसका व्यक्तित्व अधिक सक्रिय रहता है। एक तरह से यदि यह कहा जाए कि व्यक्तित्व इन 5 से 10 गुणों के भीतर जिंदा रहता है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जैसे- सामाजिकता, आत्मविश्वास, उदासी आदि।

(iii) गौण प्रवृत्ति (Secondary disposition)

गौण प्रवृत्ति वैसे गुणों को कहा जाता है जो व्यक्तित्व के लिए कम महत्वपूर्ण कम संगत, कम अर्थपूर्ण तथा कम स्पष्ट होते हैं। जैसे- खाने की आदत, हेयरस्टाइल, पहनावा आदि।

7.3.3 कैटेल का योगदान

कैटेल ने शीलगुणों की संख्या 35 कर दी। कैटेल ने शीलगुणों को दो तरह से विभाजित किया -

(i) सतही शीलगुण (Surface Trait)

इस तरह का शीलगुण व्यक्तित्व के ऊपरी सतह या परिधि पर होता है, यानि इस तरह के शीलगुण ऐसे होते हैं जो व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन की अन्तःक्रिया में आसानी से अभिव्यक्त हो जाते हैं। जैसे:- प्रसन्नता, परोपकारिता, सत्यनिष्ठा आदि।

(ii) मूल शीलगुण (Source Trait)

कैटेल के अनुसार मूल शीलगुण व्यक्तित्व की अधिक महत्वपूर्ण संरचना है तथा इनकी संख्या सतही शीलगुण की अपेक्षा कम होती है। मूल शीलगुण सतही शीलगुण के समान व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन की अन्तःक्रिया में स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं हो पाता है। अतः इसका प्रेक्षण सीधे नहीं किया जा सकता है। कैटेल के अनुसार मूल शीलगुण व्यक्तित्व की भीतरी संरचना होती है। जिसके बारे में

हमें तब ज्ञान होता है जब हम उससे संबंधित सतही शीलगुण को एक साथ मिलाने की कोशिश करते हैं, जैसे सामुदायिकता, निस्स्वार्थता तथा हास्य तीनों ऐसे सतही शीलगुण हैं जिन्हें एक साथ मिलाने से एक नया शीलगुण बनता है जिसे मित्रता की संज्ञा दी जाती है।

7.3.4 <u>फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (Freud's Psycho-analytic theory)</u>

फ्रायड ने व्यक्तित्व के सम्बन्ध में मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त को तीन भागों में बाँटा।

(i) <u>व्यक्तित्व गतिकी (Personality dynamic)</u>:–

मानव व्यवहारों के निर्धारकों के रूप में फ्रायड ने कामवृत्ति (libido) को ही मौलिक स्रोत माना तथा कामवृत्ति के अन्तर्गत जीवन मूल वृत्ति (life instinct) तथा मृत्यु मूल प्रवृत्ति (death instinct) की कल्पना की। उन्होंने सभी प्रकार के रचनात्मक व्यवहारों का आधार जीवन मूल प्रवृत्ति को और सभी प्रकार के ध्वंसात्मक व्यवहारों (destructive behaviour) का आधार मृत्यु मूल प्रवृत्ति को माना। जब जीवन प्रवृत्ति का बहाव अन्दर की ओर होता है तो व्यक्ति अपने लिए रचनात्मक कार्य करता है और अपने आप से प्रेम करता है। जब इस प्रवृत्ति का बहाव बाहर की ओर होता है तो व्यक्ति दूसरों के लिए रचनात्मक एवं लाभकारी कार्य करता है। इसी तरह मृत्यु-प्रवृत्ति के अन्तर्मुखी होने पर व्यक्ति अपने आप से घृणा करने लगता है तथा अपने आपको पीड़ा पहुँचाने लगता है और जब यह प्रवृत्ति बहिर्मुखी होती है तो व्यक्ति दूसरों से घृणा करने लगता है तथा ध्वंसात्मक कार्य द्वारा दूसरों को नुकसान पहुँचाता है।

2. <u>व्यक्तित्व संरचना (Personality structure)</u>

फ्रायड ने व्यक्तित्व रचना को दो भागों में बाँटा है। (1) आकारात्मक पक्ष (Topographical aspect)

तथा गत्यात्मक पक्ष (dynamic aspect) आकारात्मक पक्ष के अन्तर्गत मन के तीन स्तर होते हैं – चेतन मन, अर्द्धचेतन मन तथा अचेतन मन। तथा गत्यात्मक पक्ष के अन्तर्गत तीन गत्यात्मक शक्तियाँ ईड (id) ईगो (ego) तथा सुपर ईगो (superego) होती हैं। व्यक्तित्व के उस गत्यात्मक भाग को ईड कहा गया जो जन्मजात, अचेतन, अतार्किक तथा अनैतिक होता है और सुख के नियम पर आधारित होता है। ईगो उस गत्यात्मक भाग को कहा गया जो अर्जित, तार्किक, विवेकशील तथा अवसरवादी होता है और यथार्थता के नियम पर कार्यरत होता है। सुपर ईगो व्यक्तित्व के उस गत्यात्मक भाग को कहा गया जो अर्जित, नैतिक तथा अलौकिक होता है और नैतिक नियम पर कार्यरत होता है। ईड तथा सुपर ईगो के विरोधी स्वरूप के कारण चेतन तथा अचेतन स्तरों पर मानसिक संघर्ष उत्पन्न होते हैं और ईगो के कारण उनका समाधान होता है।

(3) व्यक्तित्व विकास (Personality development)

फ्रायड ने व्यक्तित्व विकास में कामवृत्ति के विकास पर बल दिया और इसकी पाँच अवस्थाओं का वर्णन किया। इन पाँच अवस्थाओं में मौखिक अवस्था, गुदा अवस्था, यौन प्रधान अवस्था, अव्यक्त अवस्था तथा जननेन्द्रिय अवस्था का वर्णन किया।

7.3.5 युंग का विश्लेषणात्मक सिद्धान्त (Jung's Analytic theory)

युंग ने विश्लेषणात्मक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जो निम्नलिखित है :–

(i) व्यक्तित्व संरचना (Personality Structure)

इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तित्व का निर्माण तीन स्वतंत्र तंत्रों से हुआ है जिन्हें ईगो (ego), व्यक्तिगत अचेतन (Personal unconscious) तथा सामूहिक अचेतन (collective unconscious) कहते हैं।

Scanned with CamScanne

(11)

(2) व्यक्तित्व प्रकार (Type of personality):-

व्यक्तित्व की रचना में उपर्युक्त तीन तत्वों के अतिरिक्त दो प्रकार की मनोवृत्तियाँ — अन्तर्मुखता (introversion) तथा बहिर्मुखता (extroversion) है। युंग के अनुसार अन्तर्मुखी व्यक्ति का सम्बन्ध अन्तः एवं व्यक्तिगत जगत से होता है जबकि बहिर्मुखी व्यक्ति का सम्बन्ध बाह्य एवं वस्तुनिष्ठ जगत से होता है।

(3) व्यक्तित्व गतिकी (Personality dynamics):-

युंग का लिबिडो फ्रायड के लिबिडो से अधिक व्यापक था। उन्होंने सभी लैंगिक तथा अलैंगिक इच्छाओं या शक्तियों का केन्द्र इसी लिबिडो को माना।

(4) व्यक्तित्व विकास Personality development):-

युंग ने फ्रायड की तरह व्यक्तित्व विकास की निश्चित अवस्थाओं का उल्लेख नहीं किया। उनके अनुसार आरम्भ में लिबिडो ऐसी क्रियाओं में निवेशित होता है जो जीवन की रक्षा के लिए आवश्यक होती है। किशोरावस्था में लैंगिक मूल्य काफी सबल होते है। युवा अवस्था में जीवन प्रवृत्तियाँ तथा अनिवार्य प्रक्रियाएँ अधिक सक्रिय होती है। तीस से चालीस वर्ष की आयु में जैविक आवश्यकताओं की अपेक्षा सांस्कृतिक आवश्यकताएँ अधिक सबल एवं प्रभावशाली बन जाती है। अधेड़ व्यक्ति में अन्तर्मुखता एवं आवेगशीलता देखी जाती है। अन्त में व्यक्ति धर्म एवं अध्यात्म का सहारा लेता है।

Scanned with CamScanner

7.3.6 ऐडलर का वैयक्तिक मनोविज्ञान (Adler's Individual Psychology)

ऐडलर ने फ्रायड से अलग होकर वैयक्तिक मनोविज्ञान की स्थापना की। व्यक्तित्व स्वरूप एवं व्यक्तित्व विकास के सम्बन्ध में ऐडलर के विचारों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(i) व्यक्तित्व गतिकी (Personality dynamics)

ऐडलर ने फ्रायड के लिबिडो के स्थान पर इच्छा शक्ति (Will to power) को व्यक्ति के व्यवहारों का मौलिक प्रेरणात्मक निर्धारक माना। परन्तु बाद में उन्होंने श्रेष्ठता प्रवृत्ति (urge for superiority) को व्यक्तित्व निर्माण का मौलिक प्रेरक माना। आरम्भ में बच्चे अपने आपको असहाय एवं निर्बल पाते हैं। फलत: उनमें हीनता भाव विकसित हो जाता है। इस भाव की क्षतिपूर्ति के लिए वह ऐसे कार्यों को करने हेतु प्रेरित होता है जिससे उसे श्रेष्ठता प्राप्त हो सके।

(2) सामाजिक रुचि (social interest)

ऐडलर के अनुसार सामाजिक रुचि जन्मजात होती है। इस प्रकार उन्होंने प्रभुत्व-आकांक्षा के साथ-साथ सामाजिक प्रेरक को भी व्यक्तित्व का आवश्यक अंग माना।

(3) जीवन शैली (Style of life):-

ऐडलर के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में व्यवहार करने की अपनी विशेष शैली होती है जिससे उसका व्यक्तित्व अपूर्व बन जाता है। सभी व्यक्तियों का लक्ष्य होता है - श्रेष्ठता प्राप्त करना। परन्तु उसको प्राप्त करने के ढंग अलग-अलग होते हैं।

(4) सर्जनात्मक व्यक्तित्व (Creative self)

ऐडलर ने सर्जनात्मक आत्मा या व्यक्तित्व के प्रत्यय की कल्पना की तथा इसे वंश परम्परा तथा अनुभव का परिणाम माना।

(5) जन्म क्रम (Birth order)

एडलर के अनुसार अन्य परिस्थितियाँ समान होने पर भी जन्म क्रम के कारण बच्चों का व्यक्तित्व भिन्न हो जाता है। पहले बच्चे को माता-पिता की ओर से अधिक स्नेह मिलता है और दूसरा बच्चा जन्म लेने पर यह स्नेह छिन जाता है। इस अनुभव को अभिव्यक्ति पहला बच्चा कई रूपों में करता है।

7.3.7 एरिक्सन का सिद्धान्त (Erikson's theory)

एरिक्सन ने व्यक्तित्व निर्माण पर जैविक कारकों के साथ-साथ सामाजिक कारकों के प्रभाव पर बल दिया। इसी कारण उनके सिद्धान्त को मनोसामाजिक सिद्धान्त (Psychosocial theory) कहते हैं। एरिक्सन ने व्यक्तित्व के विकास में ईड से अधिक ईगो पर बल दिया। इसलिए उनके सिद्धान्त को ईगो मनोविज्ञान (ego psychology) भी कहा जाता है। एरिक्सन ने आठ अवस्थाओं का वर्णन किया है जो निम्नलिखित हैं :-

(1) विश्वास-अविश्वास अवस्था (Stage of trust mistrust)

एडलर के अनुसार इस अवस्था में माता के अनुकूल या प्रतिकूल व्यवहार के कारण बच्चे में क्रमशः विश्वास या अविश्वास विकसित होता है।

(2) स्वतंत्र लज्जा एवं संदेह अवस्था (Autonomy shame and doubt stage)

यह अवस्था फ्रायड के गुदा अवस्था के समान है। इस अवस्था में भी लैंगिक इच्छा से अधिक प्रबल सामाजिक प्रेरक होता है। इस अवस्था में धारण करने अथवा बहिष्कार करने की प्रवृत्ति का नियंत्रण माता-पिता द्वारा उचित ढंग से होता है तो बच्चे में स्वतंत्रता की चेतना विकसित होती है। जिससे उनमें आत्म नियंत्रण तथा आत्म विश्वास विकसित होता है।

Scanned with CamScanner

3) अनुमाई दोष अवस्था (Initiative guilt stage)

यह अवस्था फ्रायड की लिंग प्रधान अवस्था (Phallic stage) के समान है। इस अवस्था में बच्चे मातृ प्रेम ग्रंथि का समाधान करते हैं।

4) व्यवसाय हीनता अवस्था (Industry inferiority stage)

यह अवस्था फ्रायड की गुप्तता अवस्था (latency stage) के समान है। इस अवस्था में बालक अपने घर से बाहर निकल जाता है, विद्यालय जाता है, खेल कूद में भाग लेता है। जब वह किसी निश्चित उद्देश्य के साथ विशेष क्रियाओं को करके अपने व्यक्तित्व की सक्षमता का प्रयास करता है।

5) तादात्म्य भूमिका प्रसार अवस्था (Identity role diffusion stage)

यह अवस्था फ्रायड की प्रारंभिक जननेन्द्रिय अवस्था (early genital stage) के समान है। इस अवस्था में व्यक्ति यह महसूस करता है कि उसे समाज में कोई स्थान प्राप्त नहीं है या उसका अपना अलग व्यक्तित्व है और उसे सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है।

6) आत्मीयता - पृथक्कीकरण अवस्था (Intimacy - isolation stage)

यह अवस्था फ्रायड की विलंबित जननेन्द्रिय अवस्था (late genital stage) के समान है। इस अवस्था में आत्मीयता की इच्छा प्रबल होती है। प्रेम - सम्बन्ध की आवश्यकता प्रबल होती है। विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण होता है।

(7) उत्पादकता - निश्चलता अवस्था (Generativity stagnation stage)

एरिक्सन के अनुसार इस प्रौढ़ा अवस्था में व्यक्ति अपने भावी जीवन के कई विकल्पों में से किसी विशेष विकल्प को चुनता है और निर्णय लेता है उसे केवल बच्चा पैदा करना है अथवा कोई रचनात्मक कार्य करना है।

Scanned with CamScanner

(8) अहम् सम्पूर्णता- निराशा अवस्था (Ego integrity - despair stage)

इस अंतिम अवस्था में व्यक्ति की मनोवृत्ति अपने जीवन के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक होती है। सकारात्मक मनोवृत्ति होने पर वह अपने द्वारा किए गए अच्छे या बुरे कामों को स्वीकार करता है तथा सम्मान के साथ मरने के लिए तैयार होता है। नकारात्मक मनोवृत्ति होने पर वह निराशा से पीड़ित रहा करता है और चैन से मरता भी नहीं है।

7.3.8 लेविन का क्षेत्र सिद्धान्त (Lewin's field theory)

लेविन के अनुसार व्यवहार की सही व्याख्या के लिए उसके प्रेरणात्मक आधारों की जानकारी आवश्यक है। व्यवहार को उत्पन्न करने में वर्तमान की आवश्यकताओं का हाथ होता है, अतीत या भविष्य की आवश्यकताओं का नहीं। लेविन के व्यक्तित्व सिद्धान्त में निम्नलिखित बातें मुख्य हैं:-

(1) व्यक्तित्व गतिकी (Personality dynamics):-

लेविन के अनुसार व्यक्ति के व्यवहार पर मनोवैज्ञानिक तथा भौतिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है। मनोवैज्ञानिक वातावरण का तात्पर्य आवश्यकता, प्रवृत्ति, योग्यता, संवेग आदि के समुच्चय से है। इसी समुच्चय को लेविन ने जीवन क्षेत्र कहा। भौतिक वातावरण का तात्पर्य भौतिक वस्तुओं से है। व्यक्ति के व्यवहार का प्रधान निर्धारक मनोवैज्ञानिक वातावरण से है। भौतिक वातावरण समान रहने पर भी मनोवैज्ञानिक वातावरण में भिन्नता होने के कारण भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के व्यवहार भिन्न-भिन्न होते हैं।

(2) जीवन क्षेत्र के अन्तर्गत व्यक्ति तथा मनोवैज्ञानिक वातावरण दोनों निहित होते हैं। जीवन क्षेत्र की प्रत्येक वस्तु का एक निश्चित कर्षण होता है। कर्षण का अर्थ किसी वस्तु या लक्ष्य के प्रति प्रतिक्रिया करने की शक्ति है। धनात्मक कर्षण-शक्ति वाली वस्तु या लक्ष्य की ओर व्यक्ति आकर्षित होता है तथा अनुकूल व्यवहार करके अपनी वर्तमान आवश्यकता की पूर्ति करता है। इसके विपरीत नकारात्मक

कर्षण शक्ति वाली वस्तु या लक्ष्य की ~~ओर व्यक्ति आकर्षित~~
~~होता है तथा अनुकूल व्यवहार करके उसकी ओर बढ़ता~~
और से वह विकर्षित होता है तथा दूर हटने का प्रयास या व्यवहार करता है।

जीवन स्रोत गत्यात्मक होता है। यह बदलता रहता है। यह परिवर्तन जीवन स्रोत की कालिक विमा तथा यथार्थता विमा में देखा जाता है। कालिक विमा का अर्थ यह है कि अनुभव बढ़ने के साथ-साथ बच्चे का जीवन स्रोत में भी बढ़ता जाता है और विशिष्ट बनता जाता है। यथार्थता विमा का अर्थ है कि बढ़ते हुए अनुभव के साथ बच्चे के जीवन स्रोत के काल्पनिक तथा ~~अयथार्थ~~ अयथार्थ अंश घटते जाते हैं और व्यवहारिक तथा यथार्थ अंश दृढ़ बनते जाते हैं।

2) व्यक्तित्व संरचना (Personality structure) :-

लेविन के अनुसार दो प्रकार के शीलगुणों से मिलकर व्यक्तित्व की रचना हुई है। एक प्रकार के शीलगुणों को जीनाकृतिक शीलगुण तथा दूसरे प्रकार के शीलगुणों को दृश्याकृतिक शीलगुण कहा गया। जीनाकृतिक शीलगुण का तात्पर्य ऐसे शीलगुणों से है। जिसका सम्बन्ध व्यक्तित्व की आन्तरिक रूप रेखा से है। दृश्याकृतिक शीलगुण का अर्थ वे शीलगुण हैं, जिनका सम्बन्ध व्यक्तित्व के बाहरी रूप रेखा से है।

3) व्यक्तित्व विकास Personality Development) :-

लेविन के अनुसार व्यक्तित्व विकास का आधार जीवन-स्रोत (Lifespace) है। व्यक्ति के जीवन स्रोत में कई प्रकार के बल, कर्षण तथा बाधाएँ होते हैं, जिनसे व्यक्ति के व्यवहार निर्धारित होते हैं।

4) मानसिक संघर्ष (Mental conflict).

लेविन ने प्रेरकों के संघर्ष को निराशा या कुण्ठा का मौलिक कारण माना। मानसिक संघर्ष तीन प्रकार के होते हैं :- आगमन-आगमन संघर्ष, आगमन परिहार संघर्ष तथा परिहार-परिहार संघर्ष

Scanned with CamScanner

7.3.9 मरे का व्यक्तित्व आवश्यकता सिद्धान्त (Murray's Need theory of Personality)

मरे के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त को व्यक्तित्व का आवश्यकता सिद्धान्त कहा जाता है। कारण, मरे के अनुसार आवश्यकता (Need) तथा प्रेरणा (motivation) व्यक्ति में गत्यात्मक तथा निर्देशात्मक शक्ति के रूप में काम करते है और व्यक्ति को निश्चित व्यवहार करने पर बाध्य करती है।

(i) व्यक्तित्व का संप्रत्यय (Concept of Personality):-

मरे ने व्यक्तित्व के संप्रत्यय को इस ढंग से प्रस्तुत किया जो अपने आप में अपूर्व है। उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा कि यदि मस्तिष्क नहीं तो व्यक्तित्व नहीं।

(ii) व्यक्तित्व की गतिकी (Dynamism of Personality):-

मरे के अनुसार व्यक्ति के सक्रिय रहने के लिए तनाव आवश्यक है। तनावरहित होना व्यक्ति के पीड़क होता है, क्योंकि वह निष्क्रियता की अवस्था में पहुँच जाता है। अतः क्रियाशीलता बनी रहे, इसके लिए एक सीमा तक तनाव आवश्यक है।

(iii) व्यक्तित्व विकास (Personality development):-

मरे ने व्यक्तित्व के विकास में प्रारम्भिक बाल्यावस्था के महत्व पर बल दिया। उन्होंने बाल्यावस्था की पाँच अवस्थाओं का उल्लेख किया और व्यक्तित्व विकास पर प्रत्येक अवस्था के प्रभावों का उल्लेख किया।

(iv) व्यक्तित्व के निर्धारक (Determinants of personality):-

मरे ने व्यक्तित्व के पाँच निर्धारकों का उल्लेख किया जिसमें ① शारीरिक बनावट, समूह सम्बद्धता, भूमिका प्रत्याशा, अन्तर्वैयक्तिक संपर्क तथा व्यक्तित्व मापन है।

बैण्डूरा का सामाजिक अधिगम सिद्धान्त अथवा सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त :-
Bandura's social learning theory :-

जटिल व्यवहार के अर्जन की व्याख्या करने में सामाजिक अधिगम सिद्धान्त अधिक सफल है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के निष्पादन, के अवलोकन या संज्ञान से किस प्रकार सीखता है, यही इस सिद्धान्त का केन्द्र बिन्दु है। बैण्डूरा के अनुसार व्यक्ति अवलोकन के आधार पर जटिल व्यवहारों या निष्पादनों को तेजी के साथ अर्जित कर लेता है। आदर्श व्यवहार के परिणामों का प्रभाव अनुकूल [illegible] प्रतिक्रियाओं के निष्पादन पर पड़ता है, इसके शिक्षण पर नहीं। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के व्यवहार या निष्पादन को आदर्श मानकर उसके अच्छे-बुरे परिणामों को ध्यान में रखते हुए उसे अर्जित करने या नहीं करने के लिए अभिप्रेरित होता है।

7.4 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

Q1. Define Personality. Describe the type theory of Personality.
व्यक्तित्व को परिभाषित कीजिए। व्यक्ति के प्रकार सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

Q2) Describe the trait theory of Personality.
व्यक्तित्व के शीलगुण सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

Q3) Describe the Freud's psychoanalytic theory of personality.
फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

Q4) Describe the Erikson's theory of personality.
एरिक्सन के व्यक्तित्व सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

Q5) Describe the Jung's Analytic theory.
युंग के विश्लेषणात्मक सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

Scanned with CamScanner